आठवें इमाम

हज़रत इमाम अली रिज़ा अ0

आयतुल्लाह सैय्यद मुहम्मद हुसैन तबातबाई
मुतरजिम : जनाब असर नक़वी साहब जायसी

हज़रत इमाम रिज़ा (अली इब्ने मूसा) अलैहिस्सलाम सातवें इमाम के साहेबज़ादे थे और एक मशहूर रिवायत के मुताबिक़ 148 हिजरी मुताबिक़ 765 ई0 में पैदा हुए। आपका इंतिक़ाल 203 हि0 मुताबिक़ 817 ई0 में हुआ।

(उसूले काफ़ी जिल्द–1 पेज–486)

अपने बुज़ुर्गवार बाप के बाद आप हुक्मे खुदावन्दी और अपने पेश रवों के फ़ैसले के मुताबिक़ मसनदे इमामत पर बैठे। आपका दौरे इमामत ख़लीफ़–ए–हारून रशीद और फिर उसके दो बेटों अमीन और मामून के अहदे ख़िलाफ़त पर घिरा हुआ था। अपने बाप के इंतिक़ाल के बाद मामून अपने भाई अमीन से जंग में पड़ गया जिसका ख़ातमा कई ख़ून भरी जंगों और आख़िर में अमीन के क़त्ल पर हुआ। जिसके बाद मामून तख़्ते ख़िलाफ़त पर बैठा। (उसूले काफ़ी जिल्द–1 पेज–488)

इस ज़माने तक शीओं के लिए ख़ुलफ़ाए बनी अब्बास की जंगी पालीसी सख़्त से सख़्त हो गयी थी, क्योंकि अली (अ0) के हिमायती (अलवी) हर लम्हे यहाँ–वहाँ बग़ावत करते रहते थे जो ख़ून भरी जंगों की शक्ल में सामने आती थीं और इस तरह वह ख़िलाफ़त के लिए एक मुशकिल खड़ी कर देते थे जिससे निपटना ख़ुलफ़ा के लिए दुश्वार हो जाता। शीओं के इमाम उन लोगों के साथ किसी क़िस्म की मदद नहीं करते जो इस क़िस्म की बग़ावतें खड़ी करते और न उनके मामलात में कोई दख़ल देते। उस वक़्त क़ाबिले लिहाज़ तादाद में शीओं ने इमामों को अपना मज़हबी पेश्वा मान रखा था जिनकी इताअत वह फ़र्ज़ समझते थे और जिन्हें वह पैग़म्बरे इस्लाम (स0) का हक़ीक़ी ख़लीफ़ा समझते थे। वह ख़िलाफ़त को अइम्मा की ताहिर व अतहर ज़िम्मेदारी के मुक़ाबले में नीचा समझते थे और उसे रोमनों और ईरानी हुक्मरानों की हुकूमत जैसा तसव्वुर करते थे जो इस्लामी क़वानीन को नाफ़िज़ करने के बजाए माद्दा परस्त लोगों के एक गिरोह के ज़रिये चलायी जाती थी। ऐसी सूरते हाल का जारी रहना ख़िलाफ़त के लिए एक ख़तरनाक बात थी और इसके लिए एक चैलेन्ज की हैसियत रखती थी। मामून उन मुश्किलात का हल ढूँढ निकालने में लग गया जिसे ख़ुलफ़ाए बनी अब्बास की सत्तर साला पॉलिसी हल करने से क़ासिर रही थी। इस मसले को ख़त्म करने के लिए उसने अपने जानशीन की हैसियत से आठवें इमाम का इंतिख़ाब किया ताकि इस तरह दो मुश्किलात पर क़ाबू पाया जा सके। अव्वल तो यह कि वह आले रसूल (स0) को हुकूमत के ख़िलाफ़ बग़ावत करने से रोके जो बाद में ख़ुद हुकूमत में मिल जाएँगे। दूसरे यह कि लोगों का

रूहानी एतक़ाद और इमाम से उनकी अन्दरूनी वाबस्तगी ख़त्म हो जाएगी। इस तरह से मामून को दुनियावी मामलात और खुद ख़िलाफ़त की सियासत में उलझा लिया जाएगा जिसे शीआ हमेशा एक लानत और ग़ैर हक़ीक़ी चीज़ समझते रहे हैं। इस तरह उनकी मज़हबी तन्ज़ीम बिखर जायगी और फ़िर उनसे ख़िलाफ़त के लिए कोई ख़तरा न रह जायेगा। इन उमूर को अन्जाम देने के बाद फ़िर इमाम को हटा देना अब्बासियों के लिए कोई दिक़्क़त की बात न होगी।

(दलाएलुल इमामह पेज–197)

इस फ़ैसले को अमली जामा पहनाने के लिए मामून ने इमाम को मदीने से मर्व बुलाया जहाँ आप एक बार तशरीफ़ ले जा चुके थे। मामून ने पहले आप को ख़िलाफ़त और फिर ख़लीफ़ा की जानशीनी की पेशकश की। इमाम ने अपनी माज़ूरी ज़ाहिर की और तजवीज़ को ठुकरा दिया। लेकिन बाद में आप इस शर्त पर जानशीनी कुबूल करने पर राज़ी हो गये कि वह हुकूमत के उमूर कोई मुदाख़लत नहीं करेंगे और न सरकारी एजेण्टों की तक़र्रुरी और तनज़्ज़ुली से उनका कोई सरोकार होगा। (उसूले काफ़ी जिल्द–1 पेज–489)

यह वाक़ेआ 200 हिजरी मुताबिक़ 814 ई0 में पेश आया, लेकिन फौरन ही मामून ने यह समझ लिया कि ऐसा करके उसने सख़्त ग़लती की है क्योंकि शीआीयत बड़ी तेज़ी के साथ फैल रही थी। इमाम से लोगों की वाबस्तगी में इज़ाफ़ा हो रहा था और अवाम, फ़ौज और सरकारी एजेण्टों की इमाम से वालिहाना अक़ीदत हैरतअंगेज़ तौर पर बढ़ रही थी। मामून ने इस मुश्किल पर क़ाबू पाने का इलाज ढूँढा और आपको ज़हर देकर शहीद कर दिया। इमाम के इंतिक़ाल के बाद आपको ईरान के शहरे तूस में दफ़न किया गया जिसे अब मशहद कहा जाता है।

उलूमे ज़हनी पर मौजूद तसानीफ़ को अरबी ज़बान में मुन्तक़िल करने में मामून ने दिलचस्पी ली। उसने बहुत सी ऐसी नश्स्तिों का एहतेमाम किया जिसमें मुख़तलिफ़ मज़ाहिब और फ़िरकों से ताल्लुक़ रखने वाले दानिश्वर जमा होते थे और आलिमाना व दानिश्वराना मुबाहसों में हिस्सा लेते थे। आठवें इमाम ने भी इन मुबाहसों में हिस्सा लिया था और दूसरे मज़ाहिब के दानिश्वरों से बहस की थी। ऐसे बहुत से मुबाहसों को शीओं की अहादीस में महफ़ूज़ कर लिया गया है।

(मनाक़िब इब्ने शहरे आशोब जिल्द–4 पेज–351)

□□□

अक़्वाले इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम

- ☐ ख़ानदान वालों से राबता हमेशा ताज़ा रखो अगरचे सिर्फ सलाम ही हो।
- ☐ कभी अपने दीनी भाई से जिदाल या (हद से ज़ियादा) मिज़ाह न करो और उनसे झूठे वादे मत करो।
- ☐ माँ–बाप को मुहब्बत भरी निगाहों से देखना इबादत है।
- ☐ माँ–बाप को नाराज़ करने से उम्र कम हो जाती है।